बढ़ती महंगाई के खिलाफ साइकिल, घोड़ा बुग्गी के साथ प्रदर्शन

इन्द्री, (म.मो.) पैट्रोल, डीजल व रसोई गैस की बढ़ती हुई कीमतों के विरोध में कांग्रेस के लोग सड़कों पर उतरे और विरोध प्रदर्शन किया।

कांग्रेसियों ने इन्द्री में साइकिलों और घोड़ा बुग्गी पर सवार होकर तेल की कीमतों के विरोध में प्रदर्शन किया। इस मौके पर इंद्री से पूर्व कांग्रेस प्रत्याशी डॉ. नवजोत कश्यप, कांग्रेस के नेता सुनील पवार, पूर्व मन्त्री भीम मेहता, पूर्व हल्का अध्यक्ष कर्मसिहं खानपुर, प्रसांत अरोड़ा और अशोक काम्बोज ने साथियों के साथ कर्ण फिलिंग स्टेशन से प्रताप फिलिंग स्टेशन तक रोष प्रदर्शन किया। करनाल पेट्रोल-डीजल ओर खाद्य तेलों के दामों में बेहताश बढ़ोतरी के विरोध में कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी ओर प्रदेश अध्यक्ष कुमारी सैलेजा के दिशा निर्देश पर सैक्टर-12 स्थित पेट्रोल पंप के समक्ष बीजेपी सरकार के खिलाफ जमकर विरोध प्रदर्शन किया। कांग्रेसी कार्यकर्ता हाथों में जुमलों की सरकार, तेल की मार, मोदी सरकार तेल की मार जैसे नारे लिखी तख्तियां हाथों में थामे हुए थे।

करनाल में भी प्रदर्शन

ऐसा ही प्रदर्शन करनाल में भी हुआ। कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय सचिव वीरेंद्र राठौर ने कहा कि देश में पैट्रोल व डीजल जनता की पहुंच से दूर जा चुका है। पैट्रोल व डीजल शतक लगाने के नजदीक पहुंच गए है। जबसे भाजपा सत्ता में आई है, तब से तेल की कीमतों में 35 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। विश्व में भारत एक ऐसा देश है, जहां पर पैट्रोल-डीजल पर सबसे ज्यादा टैक्स लिया जाता है। असंध

विधायक शमशेर सिंह गोगी ने कहा कि भाजपा सरकार गूंगी-बहरी सरकार है, जिसको जगाने के लिए देश भर में कांग्रेस द्वारा धरने-प्रदर्शन किए गए हैं।

प्रदर्शन में युवा कांग्रेस जिला प्रधान इंद्रपाल सिंह, राजेन्द्र बल्ला पूर्व सदस्य पुलिस भर्ती बोर्ड, निश्चय सोही पूर्व प्रधान युवा कांग्रेस जिला करनाल, अरूण पंजाबी, नरेन्द्र जोगा, ललित बुटाना, गोपाल सहोत्रा, राजबीर चौहान, राजकिरण घीड़, राजेद्र कल्याण,सुनहरा बाल्मिकी, जितेन्द आदि शामिल थे।

बेवजह सड़कों पर नहीं घूमें, कटेंगे चालानः एसपी

करनाल, (म.मो.): पुलिस अधीक्षक गंगाराम पुनिया ने कहा कि कोरोना महामारी से संक्रमण की दर लगातार घट तो रही है मगर नियमों की अनदेखी करने से इस महामारी को बढ़ने में देर नहीं लगेगी। अपने घरों में रहकर कोविड-19 के नियमों की पालना करके अपने तथा अपने परिवार को सुरक्षित रखे। नियमों की अनदेखी जीवन पर भारी पड़ सकती है।

उन्होंने कहा कि जिला पुलिस कोरोना महामारी से आमजन की सुरक्षा के लिए दिन-रात तैनात है। बेवजह सड़कों पर घूमने वालों व नियमों की अवहेलना करने वालों के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही की जा रही है। नियमों की अवहेलना करने पर पुलिस द्वारा चालान किए जा रहे हैं।

महंगाई पर अर्धनग्न प्रदर्शन करने वाले अब कहां छिपे हैं

इन्द्री, (जेके शर्मा) कांग्रेस के हल्का इन्द्री के पूर्व अध्यक्ष कर्मसिंह खानपुर ने तेल की बढ़ रही कीमतों को लेकर सरकार की नीतियों की जमकर आलोचना की। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार निरकुंश हो रही है। कांग्रेस राज में तेल व गैस की कीमतें बढ़ने पर अर्धनग्र प्रदर्शन करने वाले आज कहां छिपे बैठे है, जबकि कई स्थानों पर तेल 100 रुपये प्रति लीटर के पार हो गया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के पिछले शासनकाल में कच्चा तेल 110 अमरीकी डॉलर प्रति बैरल था, तब डीजल के दाम 62 रुपये थे। अब 2021 में कच्चा तेल 70 अमरीकी डॉलर प्रति बैरल है और आज डीजल 100 व पेट्रोल 106 रुपये बिक रहा है। उन्होंने कहा कि यदि सरकार ने डीजल व पेट्रोल पर लगने वाले टैक्स को कम नहीं किया, तो लोगों को अपने वाहन छोड़कर साइकिल पर या पैदल चलना पड़ेगा।

सुमिता सिंह ने खट्टर से मांगा इस्तीफा

करनाल (म.मो.) हरियाणा प्रदेश महिला कांग्रेस की अध्यक्ष रही करनाल की पूर्व विधायक सुमिता सिंह ने सीएम सिटी में तेजी से बढ़ते ब्लैक फंगस के मामलों और उसके कारण लगातार हो रही मौतों के लिए सीएम मनोहर लाल खट्टर से इस्तीफा मांगा है। उन्होंने कहा कि जब मुख्यमंत्री के विधानसभा क्षेत्र की जनता इतनी बुरी स्थिति में है तो जनप्रतिनिधि को पद पर रहने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है। उन्हें इस विफलता के लिए खुद ही करनाल के विधायक पद से इस्तीफा दे देना चाहिए। उन्होंने मृतकों के परिजनों को पांच-पांच लाख रुपये मुआवजे की मांग की।

देश मे बीजेपी का अघोषित आपातकालः त्रिलोचन

करनाल, (ममो) कांग्रेस के जिला संयोजक त्रिलोचन सिंह ने कहा है कि भारतीय जनता पार्टी आपातकाल का विरोध करने से पहले अपने गिरेबान में झांक कर देखे। बीजेपी ने देश को 2014 से अघोषित आपातकाल में दबा दिया है।पहले नोटबंदी लगाकर आर्थिक आपातकाल लगा दिया।सरकार आठ साल से अपने विरोधियों को कुचलने के लिये अनैतिक हथकंडे अपना रही है। मीडिया की आजादी को सरकार कुचल रही हैं।किसानों का दमन किया जा रहा है।देश मे अभिव्यक्ति की आजादी पर सीबीआई आईडी और अन्य एजेंसियों का पहरा लगा दिया है। कश्मीर उत्तर पूर्व में दमन चक्र चलाया जा रहा है।किसानों के शांति पूर्ण आंदोलन को कुचला जा रहा है।हर तरफ लोगो की आबाज दवाई जा रही है। जो भी बोलता हैं उसी को जेल में डाल देते हैं। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी निरंकुश तानाशाह की भूमिका में है। आज देश अघोषित कारागार बना हुआ हैं।बीजेपी देश की 138 करोड जनता पर सितम कर रही है। उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग सरकार की कठपुतली और सीबीआई सरकार का तोता बन चुकी है।सरकार ने लोगो के मौलिक अधिकारों पर प्रहार किया है।उन्होंने कहा कि आज सरकार मध्यम वर्ग का गला घोंट रही हैं।

नताशा, देवांगना और आसिफ...मजबूत लोकतंत्र की निशानी

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

यह तस्वीरें कोई आम और मामूली तस्वीरें नहीं है, बल्कि लोकतंत्र और आज़ाद भारत के लिए यह तस्वीर बहुत ही दुर्लभ और प्रासंगिक है। यह रोशन तस्वीरें सत्ता में बैठे निरंकुश तानाशाहों के रवैये पर एक जोरदार तमाचा हैं। यह तस्वीर नताशा नरवाल, देवांगना कलिता और आसिफ इकबाल की है, जिन्हें पिछले साल केन्द्र की मोदी सरकार ने सीसीए आंदोलन के दौरान उनके द्वारा सरकार के खिलाफ़ आवाज़ बुलंद करने पर यूएपीए कानून के तहत फर्जी तरीके से जेल में बंद कर दिया था, आज यह लोग जब जेल से रिहा हुए तो अपने मुस्कराते चेहरे, रोशन जबीं और हौसलों की ललकार वाली तस्वीर के साथ नज़र आये। यह सिर्फ तीन लोगों की एक तस्वीर ही नहीं है बल्कि एक मज़बूत लोकतंत्र की निशानी और पहचान को बयान करने वाला मसौदा और दस्तावेज़ है। यह मत पूछिये कि इन तीन निहत्थे लोगों को सरकार और प्रशासन ने एक साल जेल में रख कर कितना प्रताड़ित किया है, बल्कि एक साल जेल में रहने के बाद इन लोगों के बेख़ौफ़ चेहरे, हौसले और ललकार को सलाम भेजिए, जिनके सामने निरंकुश सरकार के तानाशाही रवैये बेबस हो गए।

जेल से आसानी से नहीं आए बाहर

दिल्ली हाई कोर्ट ने इन्हें दिल्ली दंगों के मामले में मंगलवार की शाम को ही ज़मानत दे दी थी। लेकिन दिल्ली पुलिस ने दिल्ली के ही कड़कड़डूमा कोर्ट में याचिका दायर कर कहा कि उनके पतों की पुष्टि नहीं की जा सकी है और इसके लिए तीन दिन का समय चाहिए। लिहाज़ा, इनकी रिहाई नहीं हो सकी। अदालत ने बुधवार को इस याचिका पर सुनवाई की और गुरुवार तक के लिए फ़ैसला सुरक्षित रखा। इन छात्रों के वकीलों ने गुरुवार को दिल्ली हाई कोर्ट में याचिका दायर की और उन्हें वहां

से ज़मानत मिल गई। लेकिन दिल्ली पुलिस ने इसके पहले ही सुप्रीम कोर्ट में मामला दर्ज कर दिया। सुप्रीम कोर्ट इस मामले में शुक्रवार को सुनवाई करेगा।

कोर्ट ने की थी खास टिप्पणी

दिल्ली हाई कोर्ट में जस्टिस सिद्धार्थ मृदुल और जस्टिस एजे भामभानी की बेंच ने देवांगना, नताशा और आसिफ़ को जमानत देते हुए कहा था, "ऐसा लगता है कि सरकार के मन में असहमति की आवाज़ को दबाने को लेकर बेचैनी है। संविधान की ओर से दिए गए विरोध के अधिकार और आतंकवादी गतिविधि के बीच का अंतर हल्का या धुंधला हो गया है। अगर इस तरह की मानसिकता बढ़ती है तो यह लोकतंत्र के लिए दुखद दिन होगा।"

बेंच ने सुप्रीम कोर्ट के कई फ़ैसलों का हवाला देते हुए और इन्हें देवांगना, नताशा और आसिफ़ से जोड़ते हुए कहा था कि इस मामले में यह नहीं कहा जा सकता कि सरकार ने प्रदर्शनों को रोक दिया हो लेकिन ऐसा नहीं दिखाई देता कि याचिकाकर्ता किसी तरह के अपराधी या षड्यंत्रकारी थे या वे किसी तरह के ग़ैर क़ानूनी विरोध-प्रदर्शन में शामिल थे। हालांकि 13 माह की नाजायज़ कैद पर कोर्ट खामोश है।

तेरह महीने अन्याय झेला, फिर भी न्यायपालिका पर भरोसा

जेल से बाहर आते ही आसिफ, नताशा, देवांगना ने संविधान, अम्बेडकर और न्यायप्रणाली के प्रशंसा-गीत गाने शुरू कर दिए!

सत्ता बहुत सोच-समझकर अपने शिकारों का चयन करती है। वह, विपक्ष के पिछवाड़े को निशाना बनाती है। राजनीतिक रूप से सबसे कमजोर हिस्सों पर हमला करके, वह दूसरों के लिए नजीर बनाती है और सबसे मजबूत लड़ाकों को आतंकित करने और उनका मनोबल तोड़ने की कोशिश करती है।

यह पहली बार नहीं है कि बड़े पूंजीपतियों के नेतृत्व वाली राज्य व्यवस्था के शिकारों ने, इस व्यवस्था का ही गुणगान किया हो। यह एक परिपाटी सी बन गई है। बुर्जुआजी का संवैधानिक राज्यतंत्र, जितना ही क्रूरता से शिकार खेलता है, कमजोर शिकार उतना ही जोर से इसका गुणगान करते हैं और जल्दी ही उसकी गोद में अपनी जगह तलाशते हैं। इससे यह भ्रम पैदा होता है कि व्यवस्था का कोई विकल्प नहीं है। यह सत्ता के खेल का एक हिस्सा है।

क्या हुआ कन्हैया और शेहला जैसों का ? वे सभी संविधान और न्यायप्रणाली की जय-जयकार करते, कांग्रेस, राजद से लेकर नेशनल कांफ्रेंस तक सब जगह दाना चुगने की जिराक में घूमे। जेल जाते हुए गौतम नवलखा ने अपनी चिट्ठी में कातर अपील की कि उसे भारत के संविधान और न्याय व्यवस्था पर पूरा भरोसा है। एक साल जेल में सड़ने के बाद, बाहर आते ही, आसिफ, देवांगना और नताशा से जो सवाल दक्षिणपंथी मीडिया ने सबसे पहले पूछा और जिसे बार-बार दोहराया, वह यही था कि क्या उन्हें देश के संविधान और न्यायप्रणाली पर भरोसा है ? दुर्भाग्य से उन सभी ने पूरे जोश के साथ इसका उत्तर 'हां' में दिया।

क्रान्तिकारी राजनीति से कोसों दूर, गांधी, अम्बेडकर, स्तालिन, माओ की पाठशालाओं में दीक्षित इन लोगों को राजसत्ता इसलिए निशाना नहीं बनाती कि ये उसके लिए कोई खतरा पैदा करते हैं, बल्कि इसलिए निशाना बनाती है कि इन शिकारों से व्यवस्था की जय-जय कराकर, जो वास्तविक खतरा हैं उन्हें आतंकित किया जा सके, और जो खतरा हो सकते हैं उन्हें क्रान्तिकारी संघर्ष की ओर मुड़ने से विरत किया जा सके!

-राजेश त्यागी